AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

कृषि विकास में महिला कृषकों की भूमिका और ग्रामीण अर्थव्यवस्था

ORIGINAL ARTICLE

Author

रामप्रसाद दुबे
शोधार्थी
जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन
शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी
जुनवानी, दुर्ग, छत्तीसढ़, भारत

शोध सार

कृषि के विकास में महिला कृषकों का योगदान विषय काफी ज्वलंत और प्रासंगिक है। वर्तमान समय में विषय की उपयोगिता को दर्शाने के लिए शोध अध्ययन का हिस्सा बनाया गया है। इसमें उन बातों को सामने लाने का प्रयास किया गया है जो कृषि में महिलाओं की मौजूदगी को साबित करते हैं इसके अलावा विषय में महिला कृषकों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक उपस्थिति की भी चर्चा जरूरी है इस दृष्टिकोण से भी शोध अध्ययन का विषय बनाया गया। आधुनिक भारत में तथा डिजिटल के दौर में महिलाओं की भूमिका कई क्षेत्रों में बढ़ रही है जिसे नकारा नहीं जा सकता। इस तरह महिलाओं की कृषि में उपस्थिती से कृषि उन्नत हुई है इस पहलू को रखने के लिए विषय को निर्धारित किया गया व साथ ही साथ इस विषय में और विस्तार से कार्य करने की आवश्यकता है। हल से लेकर ट्रैक्टर चलाने बीज बोने के काम में महिला कृषक योगदान कर रही है इस बात को भी अध्ययन में स्पष्ट किया गया है जो कृषि के क्षेत्र में महिला कृषकों के शारीरिक मानसिक व्यवस्था को भी प्रदर्शित करता है।

मुख्य शब्द

ग्रामीण महिलाएं, कृषक, कृषि उत्पादन, लैंगिक भेदभाव, मजदूरी उन्मूलन.

प्रस्तावना

ग्रामीण भारत में महिला कृषक ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। वह किसान मजदूर और उद्यमी के रूप में कई भूमिकाएं निभाती हैं। महिलाएं अपने परिवार के सदस्यों की भलाई का भी ध्यान रखती हैं और बच्चों एवं बुजुर्गों को भोजन और देखभाल प्रदान करने की जिम्मेदारी भी निभाती हैं। पितृसतात्मक समाज में महिलाओं को खासतौर पर ग्रामीण भारत में लैंगिक भेदभाव और पुरातन सामाजिक मानदंडों के कारण आर्थिक गतिविधियों में रुकावट का सामना करना पड़ता है। उन्हें बिना वेतन के नौकरियों में लगाया जाता है और शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा एवं बुनियादी सुविधाओं तक उनकी पहुंच बहुत कम या बिल्कुल नहीं होती है। भारत में कृषि श्रम शक्ति में 33 प्रतिशत तथा रोजगार वाले किसानों में 48 प्रतिशत महिलाएं हैं। पुरुषों के बढ़ते शहरी प्रवास के कारण कृषि क्षेत्र का प्रबंध महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। महिला कृषक उद्यमी श्रमिक के रूप में विभिन्न भूमिकाओं के माध्यम से कृषि में योगदान दे रही हैं। भारत में उत्पादित लगभग 60 से 80 प्रतिशत खाद्यान्न का श्रेय ग्रामीण महिलाओं के प्रयासों को दिया जा सकता है। ग्रामीण महिलाएं पशुपालन, बागवानी, कटाई के बाद के कार्य, कृषि,

सामाजिक, वानिकी, मत्स्य पालन आदि संबद्ध क्षेत्रों में योगदान कर रही हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान

- कृषि विकास भारत के लगभग 70 प्रतिशत परिवारों के लिए आय का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण और प्राथमिक स्रोत है। देश के अधिकांश लोग ग्रामीण भारत एवं क्षेत्र में रहते हैं इसलिए कृषि के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। देश की लगभग 60 प्रतिशत आबादी कृषि के काम में लगी रहती है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 18 प्रतिशत योगदान देती है। ग्रामीण भारत में 80 प्रतिशत महिला कृषि कार्यो से जुड़ी है और उस पर निर्भर हैं।
- भारत में कृषि श्रम शक्ति में 33 प्रतिशत तथा रोजगार वाले किसानों में 48 प्रतिशत महिलाएं हैं।
- पुरुषों के बढ़ते आबादी और शहरी प्रवास के कारण कृषि क्षेत्र में प्रबंधन का काम महिला कृषक के द्वारा किया जा रहा है।
- महिलाएं कृषक उद्यमी और श्रम शक्ति के रूप में भी विभिन्न भूमिकाओं के माध्यम से कृषि में योगदान दे रही हैं।
- देश के उत्पादित लगभग 60 से 80 प्रतिशत उत्पादन का श्रेय ग्रामीण महिलाओं के प्रयासों को दिया जा सकता है।
- कृषि में अधिकांश श्रम प्रधान मैन्युअल कार्य जैसे कि मवेशी प्रबंधन, चार संग्रहण, दूध निकालना आदि महिलाओं के द्वारा किया जाता है।
- ग्रामीण महिलाएं पशुपालन, बागवानी, कटाई के बाद के कार्य, कृषि, सामाजिक, वानिकी, मत्स्य पालन आदि सहित संबंध क्षेत्र भी काफी कम कर रही हैं।
- महिला कृषकों के द्वारा निभाई जाने वाली सामुदायिक प्रबंधन भूमिका सामुदायिक स्तर पर सूचना एवं विस्तार के प्रसार को सुनिश्चित करने में मदद करती हैं।
- देश के 80 प्रतिशत महिलाएं कृषि विकास में लगी हुई है और उसे पर निर्भर है। इस प्रकार महिलाएं कृषि में कई तरह से योगदान दे रही हैं।
- स्थानीय भागीदारी और स्थिरता कार्यक्रम महिलाओं को गांव स्तर की संस्थाओं और सार्वजनिक जीवन में भाग देने में सक्षम बनाता है।
- महिलाओं को अधिकार प्राप्त नहीं है जो उन्हें एक कृषक के रूप में प्राप्त होने चाहिए जैसे कि खेती के लिए लोन, कर्ज माफी, कृषि बीमा रियायत के साथ किश्त आदि।

कृषि उत्पादन में महिलाओं की प्रत्यक्ष योगदान एवं सक्रिय भागीदारी के परिणाम स्वरूप भारत अनेक प्रकार की फल, सब्जी, अनाज के मामले में महत्वपूर्ण उत्पादक देश बन गया है। पहले के समय में महिलाएं घर के काम तक ही सीमित रही, परंतु पिछले एक दशक से कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती जा रही है। विकासशील देशों में कृषि कार्यों में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी उन्हें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कृषि कार्यों में लगी महिलाओं की अपनी पहचान नहीं होती क्योंकि अर्थव्यवस्था की बागडोर ज्यादातर पुरुषों के पास रहती है। कभी–कभी तो महिलाओं के पास खेती पर मालिकाना हक भी नहीं है। उनकी अशिक्षा, अभिज्ञता, उदासीनता और अंधविश्वास के चलते कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं को मुख्य रूप से श्रमिक अथवा मजदूर का दर्जा ही प्राप्त है कृषक का नहीं। बाजार की परिभाषा एवं अवधारणा के हिसाब से किसान होने की पहचान इस बात से निर्धारित होती है कि जमीन का मालिकाना हक किसके पास है, इस बात से नहीं कि उसके पास श्रम किसका और कितना लग रहा है। हमारे समाज की विडंबना कहा जाए कि भारत में महिलाओं को भूमि का मालिकाना हक बहुत कम है जो न के बराबर

ही कहा जाएगा। इन सबके अलावा यदि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की योगदान तथा बदली हुई सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप उनकी भूमिका व महत्व को देखते हुए महिला किसानों के प्रोत्साहन की बात की जाए तो देश में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा कृषको को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं नीतियां व कार्यक्रम है लेकिन उन सब की पहुंच महिलाओं तक या तो काम है या फिर उनको क्रियान्वित करने वाला तंत्र संवेदनशील नहीं है। वर्ष 2011 में किसान स्वामित्व कानून बन जाने के बावजूद भी किसी क्षेत्र में अधिकांश महिलाएं असमानता भेदभाव एवं आर्थिक और शारीरिक शोषण मुक्त नहीं हो पाई है पिछले वर्षों में देश के विभिन्न भागों में हुए किसान आंदोलन में महिला किसानों ने सक्रिय रहकर अपनी सहभागिता के बल पर देश और विश्व समुदाय के समक्ष एक उत्तम उदाहरण पेश किया।

निष्कर्ष

इस प्रकार कृषि में महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद महिला कृषक पिछड़े स्तर पर है जो शोषण का शिकार हो रही है। इस समस्या का कारण सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव है। ऐसा माना जाता है कि खेती केवल पुरुषों का काम है वही गरीबी को समाप्त करने की चुनौती के कारण केवल लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करके ही प्राप्त की जा सकती है। लैंगिक असमानता महिलाओं को बुनियादी अधिकारों और खुशहाली के अवसरों से वंचित करती है। यह बदले में महिलाओं को गरीब बनाता है और उन्हें गरीब बनाए रखता है। भारत सरकार ने अपने दृष्टिकोण में इस अंतर को महसूस किया है और प्रशिक्षण कार्यक्रमों वित्तीय समावेशन सामाजिक सेवाओं को मजबूत करने और महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता पैदा करने के माध्यम से गरीबी उन्मूलन की दिशा में प्रयास किया जा रहे हैं। ग्राम पंचायत में महिला आरक्षण, मनरेगा में उनकी सुनिश्चित भागीदारी, आंगनवाड़ी आशा कार्यकर्ता जैसी नई भूमिकाओं ने वास्तव में ग्रामीण महिलाओं के उदास चेहरो पर आत्मनिर्भरता की चमक बिखेरने और आत्मविश्वास से भरने का काम किया है। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों ने विभिन्न सामाजिक, कल्याणकारी योजनाओं और जागरूकता कार्यक्रमों ने महिलाओं के समाज में स्वीकृति प्राप्त कामकाजी वर्ग में हिस्सेदार बनने में सफलता बनाई है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, संगीता (2022) *कृषि में महिलाओं की भूमिका,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. पूनिया, मनदीप (2022) *किसान आंदोलन ग्राउंड जीरो जीरो,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. शशिधर, रामाज्ञा (2012) *किसान आंदोलन की साहित्यिक जमीन,* एंटीका प्रकाशन गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

——==00==——